आजीविका/रोजी रोटी की सुरक्षा के लिए जरूरी पशुधन व्यवस्था को मजबूत बनाना।

अहम् सवाल : पशुधन व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए क्या नीतिगत मदद चाहिये ?(गहन, स्टाल-फेड, डेयरी-केंद्रित प्रणालियों के उलट), पशुधन व्यवस्था के लिए जरूरी सेवाओं के विकास के लिए क्या सार्वजनिक निवेश दिया जाना चाहिए और देश में अनुभव क्या हैं।

पृष्ठभूमि

पशुधन छोटे और सीमांत किसानो के लिए जीवन रेखा है,विशेषरूप से देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क सहित वर्षा आधारित क्षेत्रो में।ये खेती में खेती- पारिस्थितिकीय प्रक्रियाओं में अहम् भूमिका निभाते है।पशुधन व्यवस्था, भले ही दूध, मीट , ऊन, फाइबर, खाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है लेकिन यह नीति कीजरूरतऔर सार्वजनिक निवेश के मामले में हाशिये पे रहा है।

व्यापक पशुधन व्यवस्था

व्यापक पशुधन व्यवस्था को आमतौर पर उनके निचले (क्षेत्र) की मौजूदगी द्वारा पहचाना जाता है और यह अपनी बहुत से जरूरत चराई से पूरी करते है।व्यापक पशुधन व्यवस्था की मुख्य विशेषता है:

1. ये पशुधन व्यवस्था अपना बहुत सा पोषण (चारा और पानी) सार्वजानिक भूमि, परती भूमि और जंगल में चराई से प्राप्त करते है और चरवाहे व्यवस्था और खेती के साथ अच्छी तरह से जुड़े होते है।
2. ये आमतौर पे बड़ी संख्या में (चरवाहे व्यवस्था) में रखे जाते है अथवा खेती से जुड़े होते है (पशु) अथवा आँगन।
3. व्यवस्था के उत्पाद स्वभाव में कई प्रकार के है। व्यवस्था में (अंदर और बाहर) प्रवाह दूसरी उत्पादन व्यवस्था से इस तरह से जुड़ा हुआ है कि बाहरी जरूरतो पे निर्भरता कम हो जाती है।
4. कई मामलों में, पशु ही एक उत्पाद और एक संपत्ति है।
5. रोजी रोटी के लिए अचानक पड़ने वाली जरूरत के लिए बफर के रूप में अथवा विकास के लिए प्राथमिक पूंजी जुटाने में मदद करता है।

हम आगे विस्तृत रूप से गहन पशुधन व्यवस्था और व्यापक पशुधन व्यवस्था के बीच में मुख्य अन्तरो को नीचे दे गई टेबल में दिखाते है :

This Discussion Note has been prepared by Sabyasachi Das, National Coordinator, RRA Network (www.rainfedindia.org) for 4th KisanSwarajSammelan in Ahmedabad (Nov. 2-4, 2018). For more information, you can contact sabyasachidasindia@gmail.com

व्यापक पशुधन व्यवस्था	गहन पशुधन व्यवस्था
चारागाह आधारित	दुकान से ख़रीदे गए चारे पेआधारित
सार्वजानिक भूमि पे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग	बाहरी भोजन और चारे पे निर्भरता
कम बाहरी इनपुट	बाहरी संसाधनों पर निर्भर करता है
फसल - पशुधन मिश्रित व्यवस्था	एकीकरण/जुड़ाव का आभाव
चरवाहों द्वारा बड़ी संख्या में रखा जाना	छोटे और मध्यम आकर के झुंड
स्थानीय स्वदेशी नस्लें, स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल	विदेशी और क्रॉस नस्लें
कई उत्पाद - दूध, मांस, ऊन	मुख्य रूप से दूध उत्पादन
संसाधन से गरीब किसानो द्वारा पाला जाना	संसाधन समृद्ध - सिंचाई सुविधाओं वाले किसानो द्वारा पाला जाना

वर्तमान नीति ढांचे में बाधाएं / कमियां

- डेयरी विकास, क्रॉस ब्रीडिंग की वजह से दुकान के चारे की खपत बढ़ना, दूध उत्पादन को अधिकतम करने पर केंद्रित कारणों को पशुधन विकास के साथ साथ रोजी रोटी में बढ़ोतरी के लिए मुख्य वाहन के रूप में देखा जाता है।
- सफेद क्रांति के बाद जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक लचीलापन वाले स्वदेशी नस्लों को नजरअंदाज कर दिया गया है।
- कृषि व्यवस्था के साथ पशुधन के जुड़ाव को अनदेखा कर दिया गया है।
- दूध अर्थव्यवस्था पर जोर देने और कृषि में भारी मशीनीकरण ने मसौदे जानवरों के उपयोग को कम कर दिया है और इस कारण से कृषि व्यवस्था से पशुओं का अलगाव हो गया।
- सार्वजानिक भूमि, परंपरागत चराई संसाधनों तक पहुंच में कमी के परिणामस्वरूप स्वदेशी पशुधन आबादी में कमी आई है।
- टेरोमिनेंट (जुगालीकरनेवालापशु) केविकासमें, राज्योंद्वारास्वास्थ्यसेवाओं, चाराकीआवश्यकता, चराईक्षेत्रकेविकासजैसेजरूरीसेवाओंकीआवश्यकताकोअनदेखाकरकेपशुओंकोशामिलकरनाप्रमुखबाधाहै।
- पोल्ट्री के लिए अधिक पूंजी वाले मॉडल को देसी बैक यार्ड पोल्ट्री की जगह पर पसंद किया जाना , जिनमें (देसी बैक यार्ड पोल्ट्री)84% से ज्यादा आबादी है।

This Discussion Note has been prepared by Sabyasachi Das, National Coordinator, RRA Network (www.rainfedindia.org) for 4th KisanSwarajSammelan in Ahmedabad (Nov. 2-4, 2018). For more information, you can contact sabyasachidasindia@gmail.com

- डेयरी मवेशियों के लिए सरकार की स्वास्थ सेवाएं सेवाओं में बहुत सुधार हुआ है, लेकिन विकेन्द्रीकृत निवारक स्वास्थ सेवाएं की कमी के कारण स्वदेशी मवेशियों, छोटे रोमिनेंट (जुगाली करनेवाला पशु) और बैक यार्ड पोल्ट्री की उच्च मृत्यु दर है।
- कृषि और पशुपालन विभाग अलग अलग काम करते है, जिससे दोनों उत्पादन प्रणाली में सीमित जुड़ाव हो पाया है।

अनुभव/ व्यवहारिक अभ्यास अन्य :

व्यापक पशुधन प्रणाली पर सिविल सोसाइटी संगठनों और सीबीओ के निम्नलिखित अनुभव इस व्यापक पशुधन प्रणाली को मजबूत करने के लिए संभावित समाधान के रूप में उभरे हैं।

- विकेंद्रीकृत निवारक स्वास्थ सेवाएं प्रणाली
- अनंतपुर, आंध्र प्रदेश में मनरेगा के अंतर्गत चराई भूमि के पुनरुद्धार में दीर्घकालिक निवेश पर एफईएस और कई सिविल सोसाइटी संगठनों के अनुभव, साथ ही साथ निवारक स्वास्थ्य सेवाओं की मदद से जिले में भेड़ की आबादी में वृद्धि करने में मदद मिली।
- कच्छ जिले में "बनी घास" के मैदानों में चारागाह प्रणालियों में स्वदेशी (बनी भैंस) नस्लों की उच्च क्षमता को मान्यता और जरूरीसेवाओं और बुनियादी ढांचे के निवेश को स्थापित करने के लिए पशुपालन काफी स्पष्ट रूप से किया गया है।
- झारखंड, एमपी, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में पशुपालन विभाग, सिविल सोसाइटी और सामुदायिक आधारित संगठनों के परस्पर सहयोग से छोटे रोमिनेंट (जुगाली करनेवाला पशु) के लिए पशु आश्रय, स्वास्थ्य सेवाएं , चराई संसाधन के विकास पर व्यापक निवेश से आदिवासी क्षेत्रों में छोटे और सीमांत किसानो के रोजी रोटी में सुधार हुआ है।
- हाल के वर्षों में स्वदेशी नस्लों के वर्गीकरण और पंजीकरण ने स्थानीय नस्लों के संरक्षण में निवेश की आवश्यकता को बताया है।
- एपी, ओडिशा और मध्य प्रदेश में, देसी पोल्ट्री पर व्यवस्थित शुरुवात से आदिवासी किसानो की आजीविका और पोषण सुरक्षा हो गई है।
- पूर्वी भारत में, डीआरसीएससी और उसके सहयोगियों के काम ने चावल की खेती में एकीकृत कृषि प्रणालियों को शुरू किया है , जिसमें मछली और बतख पालन शामिल हैं।

अनुसंधान/खोजसम्बन्धीबाधाये

पशुधनमेंप्रमुखमिसालक्रॉसप्रजनन, भ्रूणप्रौद्योगिकी,

औरउच्चइनपुटकेमाध्यमसेजानवरोंकीउत्पादकतामेंवृद्धिकरनाहै।इस दिशा में सार्वजनिक शोध संस्थान भी शामिल हैं। हालांकि, व्यापक पशुधन व्यवस्था के लिए, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए पशुधन का योगदान (उदाहरण पेनिंग), फसल विविधीकरण, स्वदेशी नस्लों की अनुकूलन क्षमता के लिए अनुकूली लक्षण, चुनिंदा प्रजनन के माध्यम से स्वदेशी नस्ल की संभावना इन संस्थानों के शोध एजेंडे से बाहर है।

व्यापकपशुधनव्यवस्थापरसामाजिक-आर्थिकऔरसांस्कृतिकअध्ययन,

पशुधनऔरकृषिउत्पादनप्रणालीकीएकदूसरेपरनिर्भरतामुख्यधाराकेशिक्षाविदोंऔरशोधकर्ताओंकेबीचकमरुचिरखताहै। प्राकृतिकसंसाधनोंकाउपयोगकरकेपशुधनव्यवस्थाका 'क्षेत्रउत्पादकता' परशोधकीसार्वजनिकशोधमेंज्यादाजगहनहींहै।

नीतिपरिवर्तनकीआवश्यकताहै:

वर्तमान नीति ढांचे और सार्वजनिक निवेश के आधार पर व्यापकपशुधनव्यवस्थापरहालकेअनुभवोंकेसाथ-साथनिम्नलिखितबिंदुओंपरनीतिगतध्यानदेनेकीआवश्यकताहै:

- विभिन्नकृषि-जलवायुक्षेत्रयाक्रॉसप्रजननसेपशुकोशामिलकरनेकेबजाय, चयनकेमाध्यमसेस्थानीयअनुवांशिकसंसाधनों (स्वदेशीनस्लों) केसुधारकेलिएनीतिगतसहायताकीआवश्यकताहै।
- वर्तमानजनसंख्याकीमृत्युदरकोकमकरनेकेलिएविकेन्द्रीकृतजरूरीसेवाओंकीस्थापनाकेलिए 'जानवरोंकोदेने' केविकल्पकोबदलनाहोगा।
- सामुदायद्वाराचरागाहसंसाधनोंकेपुनर्जन्मऔरविशेषरूपसेमहिलाओंकेलिएउनसंसाधनोंतकपहुंच, व्यापकपशुधनव्यवस्थाकोमजबूतकरनेकेलिएमहत्वपूर्णहैं।
- राष्ट्रीयपशुधनमिशनजैसेप्रमुखसरकारीकार्यक्रमोंकोइसतरहसेफिरसेडिजाइनकियाजानाचाहिएजोव्यापकयाफो र्जिंगसिस्टममेंस्वदेशीजानवरों / पक्षियोंकोबढ़ावादेसके।
- सामुदायिक संस्थानों / सीबीओ, प्रजनकों संघों आदि को मजबूत करने के लिए सार्वजनिक निवेश की आवश्यकता है। ऐसे संस्थानों के माध्यम से, जरूरी सेवाओं की स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है।

This Discussion Note has been prepared by Sabyasachi Das, National Coordinator, RRA Network (www.rainfedindia.org) for 4th KisanSwarajSammelan in Ahmedabad (Nov. 2-4, 2018). For more information, you can contact sabyasachidasindia@gmail.com

- कृषिमेंपशुओंकेबढ़तेउपयोग - खाद, मसौदाशक्ति, कार्बनिकपदार्थकेलिए - फसल-पशुधनएकीकरणकेलिएनीतियोंऔरप्रोत्साहनोंकोमजबूतकरनेकीआवश्यकताहै।

UdainagarPragatiSamiti fills the Critical Gap in Animal Healthcare Services
http://wassan.org/rra-website/uploads/Udainagar%20Pragati%20Samiti%20fills%20the%20critical%20gap%20in%20animal%20healthcare%20services.pdf
Desi Backyard Poultry – Case Studies
http://wassan.org/desipoultry/resource_3.htm
Desi Backyard Poultry Website for more details
http://wassan.org/desipoultry.htm
RRA Case Studies
https://drive.google.com/file/d/1gkoeKH6UXDF7btq6R0tpfVbNObU9Fw4X/view?usp=sharing
Experiences from Madhya Pradesh
https://www.youtube.com/watch?v=mwGsHOsuDec&feature=youtu.be
http://anar-kali.blogspot.in/2017/03/womens-empowerment-through-backyard.html
http://www.hindustantimes.com/bhopal/sakhis-bring-poultry-biz-back-to-life-in-mp/article1-1379415.aspx
http://www.indiapost.com/fao-health-workers-in-india-turn-saviors-of-poultry-goats/
https://www.youtube.com/watch?v=KlizmwxVTcM
Banni Buffaloes
http://thewire.in/84560/maldharis-gujarat-land-right/
http://www.villagesquare.in/2016/12/16/banni-pastoralists-see-success-in-battle-for-survival/
https://www.downtoearth.org.in/news/economy/breeding-benefits-56996
Integrated Rice Farms (fish & duck rearing on rice fields)
http://www.drcsc.org/publication.html

This Discussion Note has been prepared by Sabyasachi Das, National Coordinator, RRA Network (www.rainfedindia.org) for 4th KisanSwarajSammelan in Ahmedabad (Nov. 2-4, 2018). For more information, you can contact sabyasachidasindia@gmail.com